

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मध्यप्रदेश कैबिनेट का लगभग 40 लाख किसानों को फसल ऋण पर 12 माह तक शून्य ब्याज की सुविधा देने का निर्णय केवल एक वित्तीय घोषणा नहीं है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देने वाला महत्वपूर्ण कदम भी है. दरअसल, किसानों को अल्पकालीन फसल ऋण पर ब्याज का पूरा भार सरकार वहन करेगी, जिससे खेती की लागत कम होगी और किसानों को समय पर पूंजी उपलब्ध हो सकेगी. भारतीय कृषि आज भी बड़ी संख्या में छोटे और सीमांत किसानों पर आधारित है. खेती के लिए बीज, खाद, कीटनाशक, सिंचाई और मजदूरी जैसी आवश्यकताओं के कारण किसानों को हर सीजन में ऋण की आवश्यकता पड़ती है. यदि यह ऋण महंगे ब्याज पर मिले तो किसान की आय का बड़ा हिस्सा ब्याज चुकाने में चला जाता है. ऐसे में शून्य ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराना किसानों को साहूकारों और अनौपचारिक कर्ज व्यवस्था

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिलेगी नई ऊर्जा

से दूर रखने का प्रभावी माध्यम बन सकता है. इस योजना का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि किसान समय पर कृषि निवेश कर सकेंगे. अवसर देखा गया है कि पूंजी की कमी के कारण किसान बेहतर बीज या आधुनिक तकनीक का उपयोग नहीं कर पाते. परिणामस्वरूप उत्पादन और आय दोनों प्रभावित होते हैं. सस्ता या ब्याज मुक्त ऋण खेती को अधिक लाभकारी बनाने में मदद कर सकता है. यदि किसान की नकदी स्थिति मजबूत होगी तो उसका सीधा असर ग्रामीण बाजारों पर भी दिखाई देगा. कृषि उपकरण, उपभोक्ता वस्तुएं और स्थानीय व्यापार सभी को इसका लाभ मिलेगा.हालांकि, ऐसी योजनाओं की सफलता केवल घोषणा से नहीं बल्कि प्रभावी क्रियान्वयन से तय होती है. यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि ऋण वास्तव में पात्र किसानों तक पहुंचे. कई बार छोटे किसानों की तुलना में बड़े और प्रभावशाली कृषक संस्थागत ऋण का अधिक लाभ उठा लेते हैं. सरकार और सहकारी बैंकों को पारदर्शी व्यवस्था विकसित करनी होगी ताकि लाभ का समान वितरण हो सके. दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न वित्तीय अनुशासन का है. ब्याज मुक्त ऋण का उद्देश्य किसानों को राहत देना है, लेकिन इससे ऋण वापसी की संस्कृति कमजोर नहीं पड़नी चाहिए. यदि किसान समय पर ऋण चुकाते हैं तो बैंकिंग प्रणाली मजबूत रहती है और भविष्य में भी किसानों को आसानी से ऋण उपलब्ध होता है. इसलिए सरकार को जागरूकता और निगरानी दोनों पर समान ध्यान देना होगा.

मोदी की व्यापार दृष्टि ने अवसरों के द्वार खोले



यूके के साथ ऐतिहासिक व्यापार समझौता, जो 15 जुलाई से लागू होगा, भारतीय किसानों, एमएसएमई, मछुआरों, स्टार्टअप और कारीगरों के लिए वैश्विक अवसर और समृद्धि लाएगा. यह नौकरियां सृजित करेगा और भारतीय नागरिकों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले सामान को उचित कीमतों पर उपलब्ध कराएगा, जिससे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 मिशन को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी. भारत और यूके के बीच परिवर्तनकारी व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (सीडीए) भारतीय वस्तुओं के लिए यूके में सभी क्षेत्रों में, विशेष रूप से श्रम-प्रधान क्षेत्रों में, व्यापक बाजार पहुंच सुनिश्चित करेगा.

दोनों पक्षों के लिए फायदेमंद यह समझौता लगभग 100ब व्यापार मूल्य को शामिल करते हुए लगभग 99 प्रतिशत टैरिफ लाइनों पर तुरंत शुल्क समाप्त करेगा, जिससे भारतीय निर्यात के लिए अपार अवसर सृजित होंगे. सीडीएएक जन-केंद्रित समझौता है, जिस पर पिछले साल प्रधानमंत्री मोदी और ब्रिटिश प्रधानमंत्री सर फ्रैंक स्टारमर की उपस्थिति में हस्ताक्षर किये गये थे. यह समाज के हर हिस्से को फायदे देता है. किसानों को

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में, भारत को अब एक मजबूत अर्थव्यवस्था और अस्थिर विश्व में एक भरोसेमंद साझेदार के रूप में व्यापक रूप से सम्मान दिया जाता है. इसने खुद को एक भरोसेमंद साझेदार के रूप में स्थापित किया है, जिसका एक आकर्षक बाजार है और यह दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था बनी हुई है . महत्वपूर्ण और व्यापक सुधारों, व्यवसाय करने में आसानी में सुधार, छोटे अपराधों को अपराध मुक्त करने और पीएम के वैश्विक व्यक्तित्व ने भारत को एक आकर्षक निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित किया है. आज, दुनिया भारत की विकास कहानी का हिस्सा बनना चाहती है—और एफटीए पर हस्ताक्षर करना चाहती है. इन व्यापार समझौतों ने घरेलू बाजार को भी धीरे-धीरे खोलना सुनिश्चित किया है. इससे भारतीय बाजार अधिक प्रतिस्पर्धी होगा और स्थानीय निर्माता उच्च गुणवत्ता वाले सामान प्रतिस्पर्धी कीमतों पर बनाने के लिए प्रोत्साहित होंगे, जो प्रधानमंत्री के विकसित भारत मिशन का एक मुख्य तत्व है.

अपने घरेलू हितों से समझौता किए बिना उच्च मूल्य वाले निर्यात बाजारों तक पहुंच मिलेगी. मछुआरों को विशाल यूके बाजार में अधिक सीफूड निर्यात से फायदा मिलेगा. श्रमिकों को श्रम-गहन क्षेत्रों में नई नौकरियों के अवसर मिलेंगे. महिला उद्यमी, युवा, स्टार्टअप्स और एमएसएमई को वैश्विक मूल्य-श्रृंखला तक बेहतर पहुंच मिलेगी. पेशेवरों को बेहतर आवागमन और मान्यता के अवसरों से फायदा मिलेगा. सीडीएभारतीय किसानों के लिए प्रीमियम यूके बाजार खोलता है, जो दूसरे यूरोपीय देशों को मिलने वाले फायदों के बराबर या उनसे भी बेहतर है. हल्दी, काली मिर्च, इलायची और प्रसंस्कृत सामान जैसे आम का गूदा, अचार और दालों

को शुल्क –मुक्त पहुंच प्राप्त होगा. उच्च कृषि निर्यात से किसानों की आय बढ़ेगी और गुणवत्ता, पैकेजिंग और प्रमाणन के लिए और प्रोत्साहन मिलेगा. यह कृषि मूल्य श्रृंखला में कई नौकरियाँ भी पैदा करेगा. साथ ही, सीडीटीएघरेलू किसानों – खासकर डेयरी उत्पाद, खाद्यान्न, मोटे अनाज,सेब, ओट्स और खाद्य तेल से जुड़े किसानों – की सुरक्षा के लिए भारत के सबसे संवेदनशील कृषि क्षेत्रों को अपने दायरे से बाहर रखता है. इन्हें समझौते से बाहर रखना,मोदी सरकार को खमड़ा सुरक्षा, घरेलू मूल्य स्थिरता और कमजोर कृषि समुदायों को प्राथमिकता देने की रणनीति को प्रतिबिंबित करती है. यूके के विशाल बाजार तक तुरंत शुल्क–

इसके साथ ही यह भी समझना होगा कि केवल सस्ता ऋण कृषि संकट का स्थायी समाधान नहीं है. किसानों की वास्तविक समृद्धि बेहतर बाजार व्यवस्था, फसलों के उचित मूल्य, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, भंडारण क्षमता और कृषि प्रसंस्करण उद्योगों के विकास से आएगी. ऋण राहत एक सहायक उपाय है, लेकिन कृषि सुधारों की व्यापक प्रक्रिया का विकल्प नहीं हो सकती. फिर भी वर्तमान परिस्थितियों में 40 लाख किसानों को शून्य ब्याज फसल ऋण उपलब्ध कराने का निर्णय स्वागत योग्य कहा जाएगा. यदि इसका लाभ सही किसानों तक पहुंचता है और इसे कृषि क्षेत्र के अन्य सुधारों के साथ जोड़ा जाता है, तो यह केवल किसानों के साथ आर्थिक मदद ही नहीं करेगा, बल्कि मध्यप्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई ऊर्जा प्रदान करेगा. किसान मजबूत होंगे तो प्रदेश की विकास यात्रा भी अधिक सशक्त होगी.

ग्वालियर चंबल डायरी

मंडलम अध्यक्षों की लिस्ट आते ही कांग्रेस में बवाल, नेताओं पर सवाल



हरिश दुबे

ग्वालियर कांग्रेस में गुटबाजी और कार्यकर्ताओं की अपने ही हठी नेताओं के खिलाफ नाराजगी वैसे तो कोई अनूठी बात नहीं है लेकिन बोते रोज हुई मंडलम अध्यक्ष नियुक्तियों ने फिर एक बार कांग्रेस की कलह को उजागर कर दिया है. राजनीतिक अंत:वीथिकाओं से बाहर निकल कर असंतोष अब सोशल मीडिया पर छितरा रहा है. कांग्रेस आईटी सेल के जिलाध्यक्ष रह चुके तरुण यादव ने तो अपनी पोस्ट में तंज कसते हुए कांग्रेस के खिलाफ चुनाव लड़ने वालों को मंडलम अध्यक्ष बनाए जाने पर डबल बर्धाई दे दी है. ऐसे वक्त जब साल भर के भीतर निकाय चुनाव होने हैं और पार्टी में बुथ मजबूत करने के लिए गाल बजाए जा रहे हैं, तमाम मंडलम में जनाधारविहीन और स्थानीय छत्रपों की चाकरी करने वालों को थोपे जाने से कांग्रेस के वह जमीनी कैंडर हताश है जो पार्टी के आंदोलनों में झंडा डंडा लेकर आगे चलता रहा है और पुलिस की लाठियों भी खाता है. जिलाध्यक्ष भले ही सुरेन्द्र यादव हैं लेकिन मंडलम अध्यक्षों की नियुक्तियों में ग्वालियर शहर की तीनों विधानसभा सीटों के एकछत्र राजा बने नेताओं की ही चली है. छत्रपों की दलील है कि उन्हें ढाई साल बाद विधानसभा चुनाव लड़ना है, लिहाजा उन्हें चुनावी हित अहित का भी ध्यान रखना है. इसके उलट पार्टी कार्यकर्ताओं का आरोप है कि संगठन ने जमीनी कार्यकर्ताओं को दरकिनार कर ऐसे लोगों को मंडलम अध्यक्ष का प्रभार सौंप दिया है जो निष्क्रिय हैं और वरिष्ठ नेताओं ने अपनी पसंद के लोगों को पद बांट दिए हैं, जिससे निष्ठावान और पुराने कार्यकर्ता अब भाजपा से लड़ने में वक्त जाया करने के बजाए अब घर बैठने के बारे में

सोचने लगे हैं. कई क्षेत्रों में यह शिकायतें भी सामने आई हैं कि पार्टी से बाहर के नेताओं के इशारे पर नियुक्तियां की गई. सच्चाई यह भी है कि ग्वालियर-चंबल संभाग में कांग्रेस अलग-अलग गुटों में बंटी हुई है. हर गुट अपने समर्थकों को मंडलम अध्यक्ष बनवाना चाहता था, यही वजह है कि नियुक्तियों के बाद विरोध प्रदर्शन और विवाद की स्थिति बनी है. बहरहाल, संगठन के इस तरह के फैसलों को लेकर कार्यकर्ताओं की नाराजगी भोपाल और दिल्ली तक पहुंच गई है. क्या चुनावी तैयारियों से पहले कांग्रेस इस असंतोष को संभाल पाएगी ?

कांग्रेसी विष्णुकांत अब कॉकरोच के भेष में

विष्णुकांत शर्मा कांग्रेस में हैं और आज भी अपनी कांग्रेसियत से इंकार नहीं करते लेकिन उन्होंने अब कॉकरोच जनता पार्टी का परचम थाम लिया है. आज उन्होंने इसी नए राजनीतिक मंच के बैनर तले नीट परीक्षा के पेपर लीक और धर्मनं्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस की. कांग्रेस से रहते हुए कॉकरोच जनता पार्टी से जुड़ने के सबसे पहले भारतीय हैं, फिर अंबेडकरवादी हैं और बच्चा बचाओ आंदोलन पहले से ही चला रहे हैं, चूंकि कॉकरोच पार्टी ने देश के बच्चों के भविष्य से जुड़ा मुद्दा उठाया है, इसलिए उन्होंने इससे जुड़ना उचित समझा.

विष्णुकांत दलील देते हैं कि केजीपी कोई रजिस्टर्ड राजनीतिक दल नहीं है बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है, लिहाजा दलीय निष्ठाओं पर सवाल नहीं उठाया जा सकता है. कांग्रेस की सदभावना एवं कोमी एकता प्रकोष्ठ के अध्यक्ष रह चुके विष्णुकांत एक बार पार्टी से बाहर और 2018 में विधानसभा का चुनाव निर्दलीय भी लड़ चुके हैं, बाद में कांग्रेस में वापसी हो गई थी. अन्ना से जुड़े रहे और अब गांधीवादी संगम चलाते हैं.

ग्वालियर आ रहे हैं पप्पू यादव

पप्पू यादव आज ग्वालियर आ रहे हैं, लिहाजा कांग्रेस में हलचल है. उन्होंने पिछला चुनाव कांग्रेस से टिकट न मिलने पर बगावत कर निर्दलीय लड़ा था और छठवीं बार सांसद निर्वाचित हुए थे. बाद में उन्होंने अपनी जन अधिकार पार्टी का कांग्रेस में विलय कर दिया था. हालांकि पप्पू का मप्र या चंबल की सियासत से कोई सीधा सरोकार नहीं है लेकिन उन्हें युवक कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव मितेंद्र दर्शन सिंह ग्वालियर लेकर आ रहे हैं. युवक कांग्रेस इन दिनों छात्रों की मूँज अभियान चलाकर नीट, सीबीएसई और पेपर लीक जैसे मुद्दे, शिक्षा व्यवस्था में सुधार, रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाओं की पारदर्शिता आदि विषयों पर चर्चा के लिए युवा संवाद कार्यक्रम चला रही है. पप्पू यादव का दौरा इसी सिलसिले में है.



10 साल में 7 पीएम, बड़ी नाइंसाफी है!

अंग्रेजों को शर्म से पानी-पानी हो जाना चाहिए! हमारे नरेंद्र मोदी 12 वर्ष से लगातार प्रधानमंत्री हैं. नेहरू 1947 से 1964 तक 17 वर्ष लगातार पीएम रहे. इंदिरा गांधी 1966 से 1977 और फिर 1980 से 1984 तक प्रधानमंत्री रहीं. उन्होंने कुल 15 वर्ष शासन किया. दूसरी ओर बेवारा आफ्त का मारा ब्रिटेन है, जहां 10 वर्ष में 7 प्रधानमंत्री देखे गए. कंजरवेटिव पार्टी या अनुदात दल के 5 प्रधानमंत्री थे- डेविड कैमरून, थेरेसा मे, बोरिस जॉनसन, लिज ट्रस, ऋषि सुनक. अब लेबर पार्टी या श्रमिक दल के कीर स्टार्मर को पीएम पद छोड़ना पड़ा. उनकी जगह उसी पार्टी के रेशी बर्नहम पीएम बनने जा रहे हैं. कब तक पद पर रहेंगे, इसकी कोई गारंटी या वारंटी नहीं है. रहेगी भी कैसे! एक समय कहते थे कि अंग्रेजों के राज में कभी सूरज नहीं डूबता जबकि भारत पर 2 सदियों तक राज करने वाला ब्रिटेन अब इस तरह कमजोर हो गया है कि खो-खो के खेल के समान पीएम खिसकते चले जा रहे हैं. स्टार्मर 717 दिनों तक तो लिज ट्रस ने सिर्फ 49 दिनों तक प्रधानमंत्री पद संभाला. जो नेता खो दे जनता का विश्वास, वह पीएम पद पर कैसे



रहे आबाद ! ब्रिटेन ने ब्रेजिट जनमत संग्रह कर 10 वर्ष पहले यूरोपीयन यूनियन से जुत होने का फैसला किया. इसके बाद ब्रिटेन में राजनीतिक अस्थिरता आई और उसकी हालत पतली होती चली गई. अब 57 प्रतिशत ब्रिटिश मानते हैं कि यूरोपीयन यूनियन या ईयू को छोड़ने का फैसला गलत था. ईयू के साथ ईलू-ईलु जारी रखना चाहिए था. दूसरी ओर 11 प्रतिशत अंग्रेज मानते हैं कि इन 10 वर्षों में उनकी जिंदगी बेहतर हुई है. भारत में भी सक्षिप्त कार्यकाल वाले कुछ प्रधानमंत्री हुए, जिनमें चौधरी चरणसिंह, चंद्रशेखर, एचडी देवेगौड़ा, इंदुकुमार गुजराल शामिल हैं. अटलबिहारी वा किराई 3 बार पीएम बने का रहा. पहले 13 दिन की, फिर 13 महीने की और बाद में 5 वर्ष तक सरकार का नेतृत्व किया. उन्होंने कहा था कि मैं ऐसी सत्ता को चिमटे से भी छूना पसंद नहीं करूंगा, जो जोड़-तोड़कर बनाई गई हो. अब जोड़तोड़ नहीं, पाटिया फोड़कर सत्ता सिंहासन को मजबूत किया जाने लगा है, जिसे स्वर्ग से देखकर अटल नमो नमो का मंत्र जप रहे होंगे. बहरहाल, ब्रिटेन को देखकर कहा जा सकता है कि 10 साल में 7 पीएम, बड़ी नाइंसाफी है!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12299

—डॉ.सागर खादीवाला

1 2 3 4 5 6

7 8 9

10 11 12

13 14

15 16 17

18 19 20

21 22

की सबसे बड़ी संख्या 3. अफीम के सत से बनने वाला एक विशेष पदार्थ जो तंधबाकू के समान पिया जाता है 4. जलाना 5. नियम, दस्तूर, रीति 6. बुद्धि, आदमी, श्वसुर 10. राजा, अर्जुन के लिए प्रयुक्त होने वाला नाम 11. एक प्राचीन देश 12. तर्क-वितर्क, किसी पक्ष के खंडन या मंडन में प्रयुक्त होने वाली बातचीत 13. पुराणों के अनुसार देवताओं का मानव शरीर धारण करना 14. सरस्वती एक प्रकार की वीणा 16 सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक महात्मा 17. नुकीला, तेज (सं.) 19. जो की तरह का एक अन्न, अंकुर

Solution 12298

ह	त	बाँ	ध	व	वि	दा
ला		झ	न	स	न	द
का	ना		ह	स	र	त
न	ट	व	र	ला	त	क
	क	र्ण		प्र		अ
आ	शा		क	त	र	ना
शि	ला	जी	त	सा	द	गौ
क		त	रा	ई		र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्त्री पक्ष से नवीन समाचार की प्राप्ति होगी, सुख प्राप्त होगा, नवीन मित्र से भेंट होगी, व्यापार के क्षेत्र में यात्रा की रूपरेखा बनेगी, वर्ष के प्रारंभ में शासन सत्ता का लाभ प्राप्त होगा, शिक्षा में रूचि रहेगी, मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना पड़ेगा, व्यर्थ के विवाद एवं मतभेद बढ़ेंगे.

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों

मेघ– निजी कार्य को ठालने से समस्या बढेगी, झगड़ों से परेशान होकर काम छोड़ने का मन बनेगा, कार्यसिद्धि के लिये दौड़धूप करना होगी, मित्रों का सहयोग मिलेगा. **वृषभ**– केरियर को सफलता के लिये सही समय का इंतजार करें, धार्मिक कार्यों पर रूचि रहेगी, शारीरिक कष्ट से छुटकारा मिलेगा, पुराना पैसा प्राप्त होगा. **मिथुन**– टालमटोल के चलते कामकाज में परेशानी होगी, सावधानी रखकर कार्य करें, हितकर रहेगा, लापरवाही करने पर नुकसान हो सकता है. **कर्क**– मांगलिक कार्यों संभव है, कार्यक्षेत्र में अपमान हो सकता है, संतान पक्ष को सफलता मिलेगी, सहयोग लाभकारी रहेगा, सामाजिक कार्यों में लगाव रहेगा.

को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, शिक्षा में रूचि रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है, शिक्षा में व्यवधान के कारण मानसिक परेशानी होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को मित्र एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा, व्यापार के क्षेत्र में लाभ का योग है,मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्र से भेंट होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा.

सिंह– कामकाज के सिलसिले में यात्रा हो सकती है, वैभव विलासिता के कार्यों में खर्च होगा, बिगड़े कार्यों में सुधार होगा, रोजगार के कार्यों में वृद्धि होगी. **कन्या**– मित्रों के साथ मौजमस्ती में समय व्यतीत होगा, आकस्मिक लाभ संभव है, मानसिक शांति मिलेगी, शादी विवाह के कार्यों में सफलता का योग है. **तुला**– नजदीकी लोगों के कारण भागदौड़ बढ़ सकती है, आप जोखिम उठाने के लिये तैयार रहेंगे, आय के साधनों में वृद्धि होगी, रोजगार आदि की प्राप्ति होगी. **वृश्चिक**– मुश्किल है, विरोधी वर्ग प्रबल होगा, भागदौड़ अधिक करनी होगी. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक गौरवर्ण का दुबला पतला, माता पिता का आदर करने वाला होगा. नौकरी एवं व्यवसाय दोनों में अच्छी तरह तरक्की करेगा, गणित एवं विज्ञान के क्षेत्र में अच्छी उन्नति होगी, अपने कार्य में दूसरों का हस्तक्षेप पसंद नहीं करेगा.

धनु– घरेलू आयोजन में बड़ चढ़कर हिस्सा लेंगे, पुराने पेंडिंग कार्य पूरे होंगे, माता पिता की आशाओं की पूर्ति होगी, व्यापार की स्थिति संतोषजनक रहेगी. **मकर**– कानूनी मामले आपसी बातचीत से सुलझेंगे, कामकाज में परिवार का अच्छा सहयोग रहेगा, अधिनस्थ लोगों का विरोध बढ़ सकता है. **कुम्भ**– बड़ी जिम्मेदारी पूरी होने से प्रसन्नता होगी, पुराना कर्ज चुकता होने की संभावना है, शुभ समाचार मिलेगा, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, वाणी प्रभावशाली रहेगी. **मीन**– नए सौदे लाभकारी रहेंगे, दौड़धूप से रुका कार्यों अच्छी तरह बन जायेगा, भूमि भवन संबंधी मामलों में विजय मिलेगी, वाहन का सुख मिलेगा.

केजरीवाल का नेतृत्व भ्रष्ट लगने लगा. उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव फरवरी 2027 में हो सकता है. वहां भी सपा के 37 सांसदों में से अनेक को अखिलेश यादव में

SUDOKU 7431

4	6		3	8	9		7
	1		9	6		5	4
					8		
	4		5				8
2		5		4		6	1
	3			1		7	
		3					
5	9		7		2		6
7		6	4		3		9

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ७ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ७पहली का केवल एक ही हल है.

नवभारत संपादक 7430

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	7	2	3	7
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3